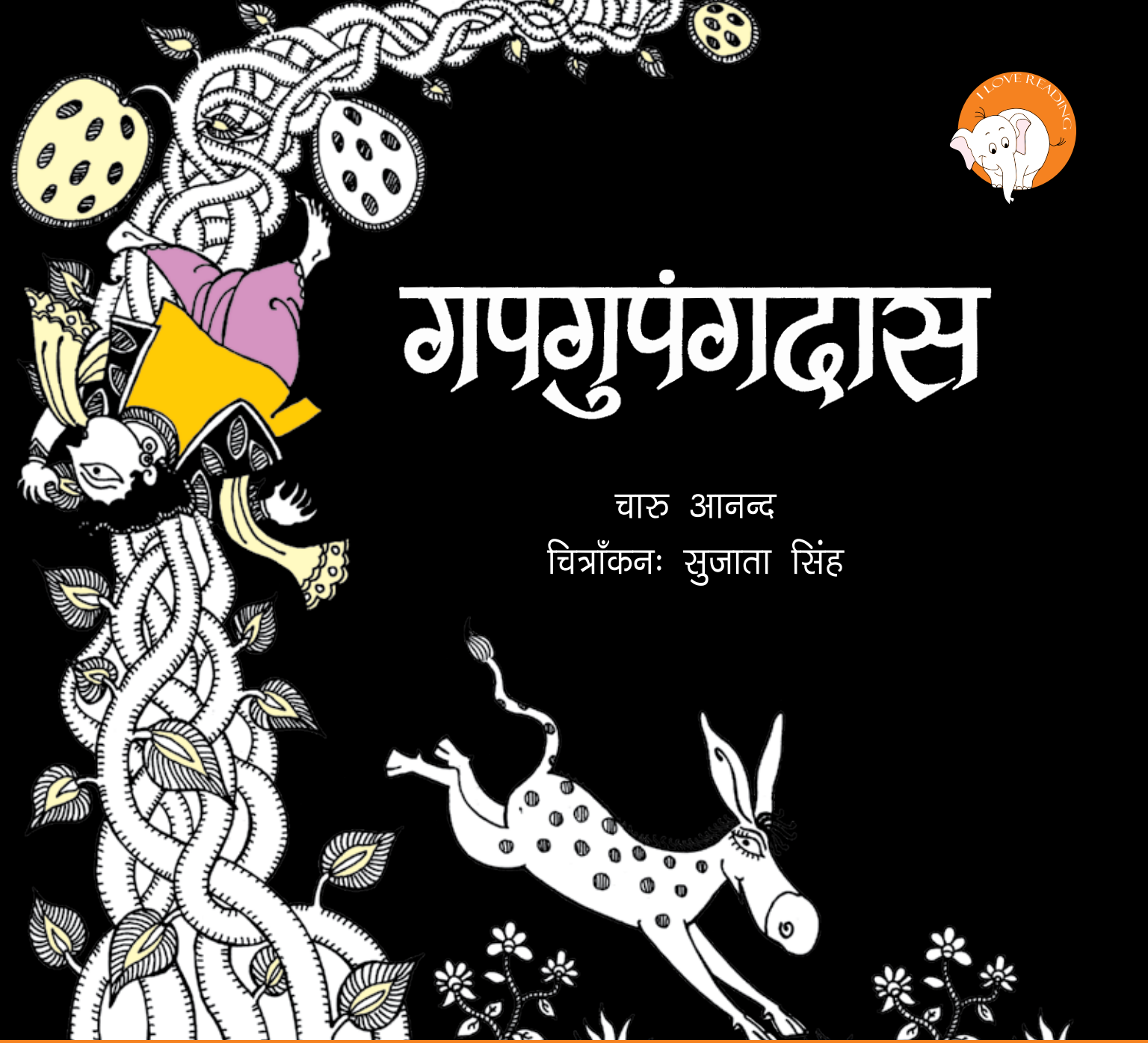

गपगुपंगदास

चारु आनन्द

चित्राँकनः सुजाता सिंह

a 300m thinkbook from Katha

गपगुपंगदास को गप मारने की बहुत आदत थी। “यह भी एक कला है, सबके बस की बात नहीं!” वह कहता था।

एक दिन, उसके दोस्तों ने ताना मारा, “अपनी इस अनोखी कला से शहंशाह से इनाम लो तो जानें!”

बस फिर क्या था, गपगुपंगदास पहुँच गया दरबार में।

बोला, “शहंशाह–ए–आलम, आपकी नगरी में इतना गज़ब हो गया, और आपको खबर तक नहीं!”

“क्यों ऐसा क्या हो गया?” शहंशाह ने आश्चर्य से पूछा।

“हुजूर, जो हुआ वह आज से पहले कभी न हुआ था। मेरा एक जूता कहीं भाग गया!” उसने कहा।

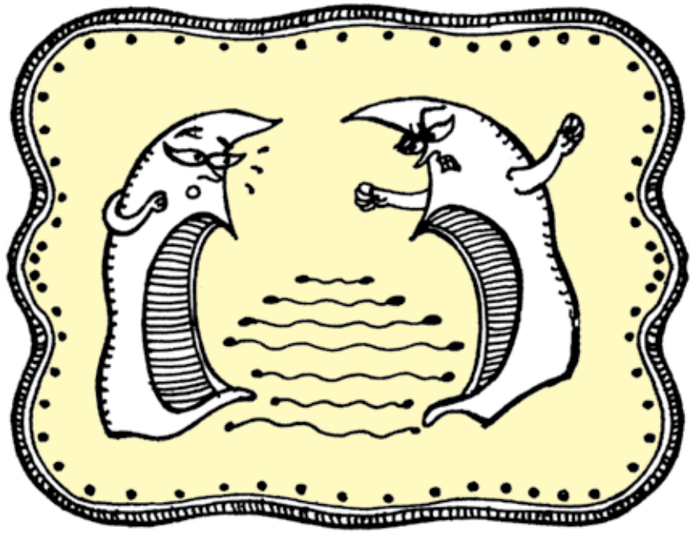

“जूता भाग गया!” शहंशाह चौंके।

“जी हाँ! कल रात मैं अपने जूतों को पॉलिश करते–करते सो गया। अचानक शोरगुल सुनकर उठा।

देखा तो, दोनों जूते आपस में लड़ रहे थे। मैंने पॉलिशवाले जूते को डांटा तो वह मेरा चोगा पहनकर गुस्से से बाहर निकल गया।”

शहंशाह समझ गए कि, यह गपगुपंगदास की कोरी गप है।

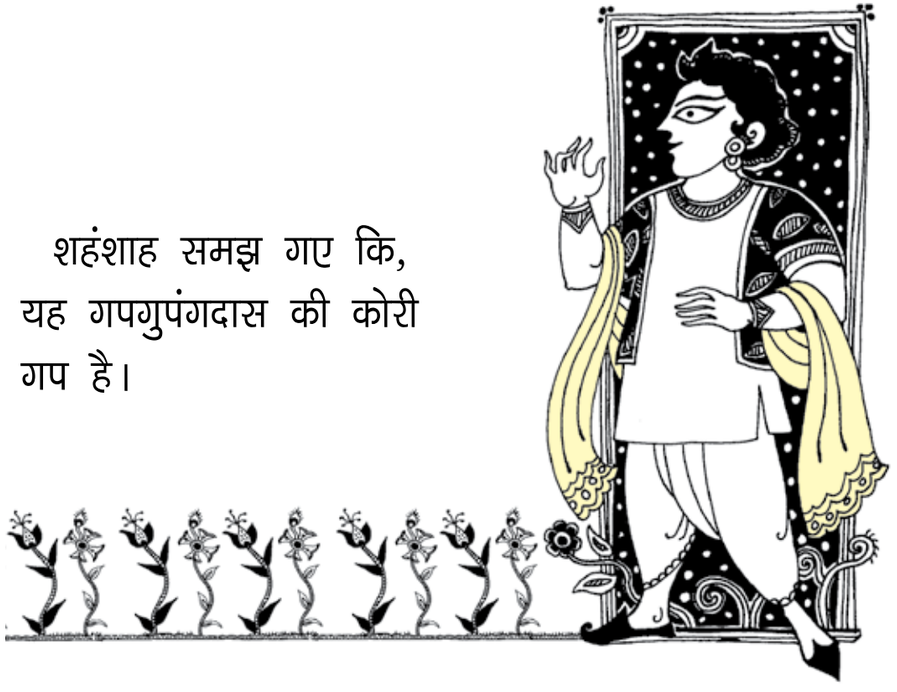

"मैंने अपना दूसरा
जूता पहना और निकल
पड़ा – उस बदमाश
जूते की खोज में।
दुखी और परेशान मैं
उसके पीछे–पीछे भागा।
इधर भागा, उधर भागा।
भागते–भागते एक मटके
पर चढ़ गया, और चारों
तरफ उसे ढूँढने लगा।

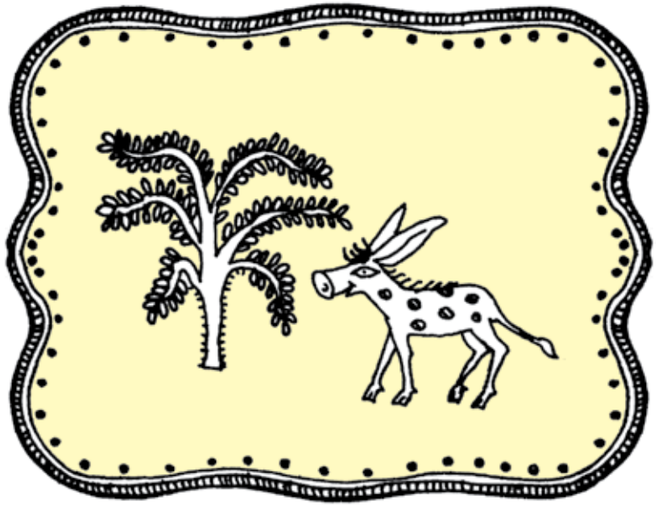

तभी मुझे एक बुढ़िया अपनी ओर आती दिखाई दी।

मैंने बुढ़िया को अपना हाल सुनाया। उसने मुझे अपना गधा दे दिया और
बोली – "बेटा मेरा गधा बूढ़ा और ज़ख्मी है पर तुम इसे ले जा सकते हो।"

मैं निकल पड़ा अपने नए साथी के संग, उस भागे हुए जूते की तलाश में। तभी मैंने एक खेत देखा।

वहाँ मुझे एक मुर्गा मियां कुक्कड़, दिखाई दिया। वह ज़मींदार की ज़मीन पर हल चला रहा था।

"क्या तुम मेरे गधे को ठीक कर सकते हो?" मैंने मियां कुक्कड़ से पूछा।

उसने मुझे एक मूंगफली दी और कहा, "इसे जलाकर इसकी राख गधे की चोट पर लगा दो।"

मैंने वैसा ही किया। और
फिर आराम करने बैठ गया।
इतने में गधा गुनगुनाने लगा।

उसके गुनगुनाते ही ज़मीन
पर गिरी राख में से एक पौधा
निकलने लगा।
पलक झपकते ही पौधा बड़ी-सी
बेल बन गया।

बेल पर तरबूज़ उगे
हुए थे। तरबूज़ों को
देखकर, उन्हें खाने का
मन करने लगा।

पर समझ नहीं आ रहा
था कि, बेल के ऊपर
चढ़ूँ, तो कैसे?

मैंने और गधे ने जब मिलकर सोचा, तो एक तरक़ीब सूझी।

मैं एक बड़े-से पत्थर पर बैठ गया। गधे ने ज़ोर से दुलत्ती मारी, मैं झटके से घूमा और बेल के ऊपर पहुँच गया।

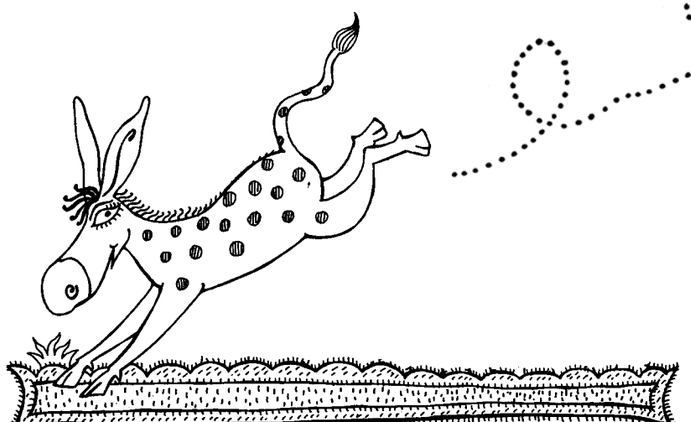

वहाँ बहुत बड़े-बड़े तरबूज़ लगे थे। जैसे ही मैंने एक तरबूज़ चाकू से काटा, चाकू तरबूज़ के अन्दर गिर गया। उसे निकालने के लिए मुझे तरबूज़ के अन्दर कूदना पड़ा।

वहाँ मुझे एक आदमी मिला। वह कुछ ढूँढ़ रहा था।

मैंने उससे पूछा, “भाई, आपने मेरा चाकू देखा है क्या?”

“मुझे परेशान मत करो मेरे चालीस ऊँट इसमें खो गए हैं!” वह बोला।

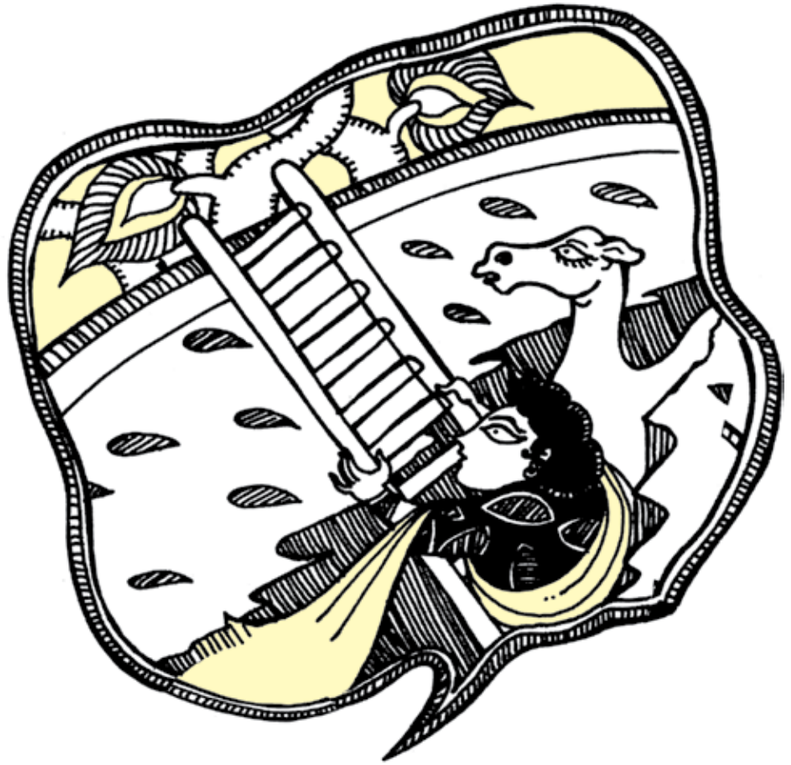

मैं घबरा गया। मैंने एक सीढ़ी ढूँढ़ी और किसी तरह से तरबूज़ के बाहर निकल आया।

बेल के ऊपर से नीचे झाँका, तो क्या देखता हूँ कि, मेरा जूता मेरे ही गधे पर सवार होकर भागा चला जा रहा था। मैंने उनका पीछा किया और उन्हें पकड़ लिया।

और अब महाराज मैं
आपको अपना इकलौता
जूता भेंट करने आया हूँ।”

शहंशाह को कभी भी इतना मज़ा नहीं आया था।

उन्होंने गपगुपंगदास को उस जूते के बदले सलमे-सितारों वाली मख़मल की एक जोड़ी जूतियाँ भेंट कीं।

देखो! गपगुपंगदास कितनी
शान से नई जूतियाँ पहनकर
अपने दोस्तों से मिलने चले जा
रहे हैं!

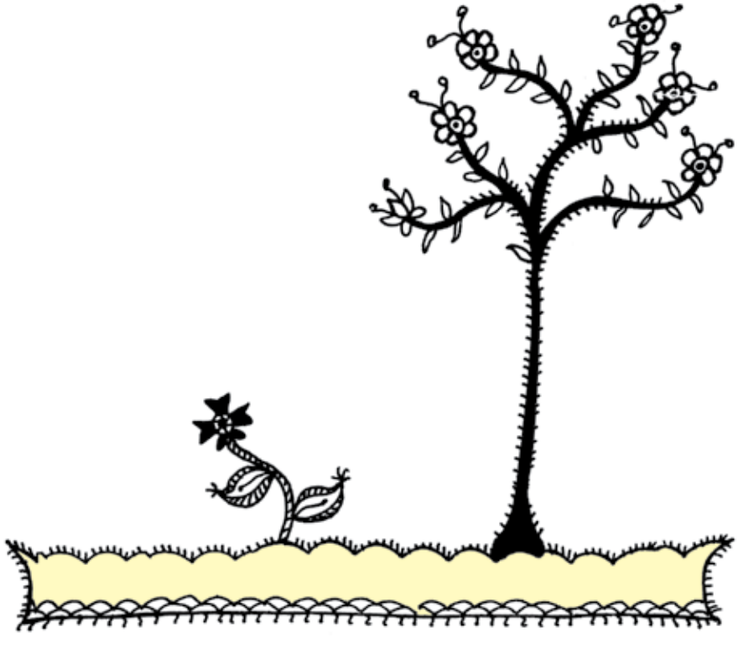

बुनो कहानी

गपगुपंगदास ने तो अपनी गप
से जीता ईनाम! भरो तुम भी
गपगुपंगदास की जैसी उड़ान। साथ
दिए गए सभी पात्रों को लेकर बनाओ
एक कहानी निराली।

बूढ़ी अम्मा

मख़मली जूती

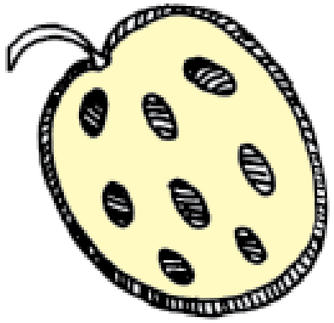

रसीला तरबूज़

मियाँ कुक्कड़

धोबी का गधा

ढूँढो वह अनोखा जानवर
जो करना चाहता है, बादलों
की सैर!

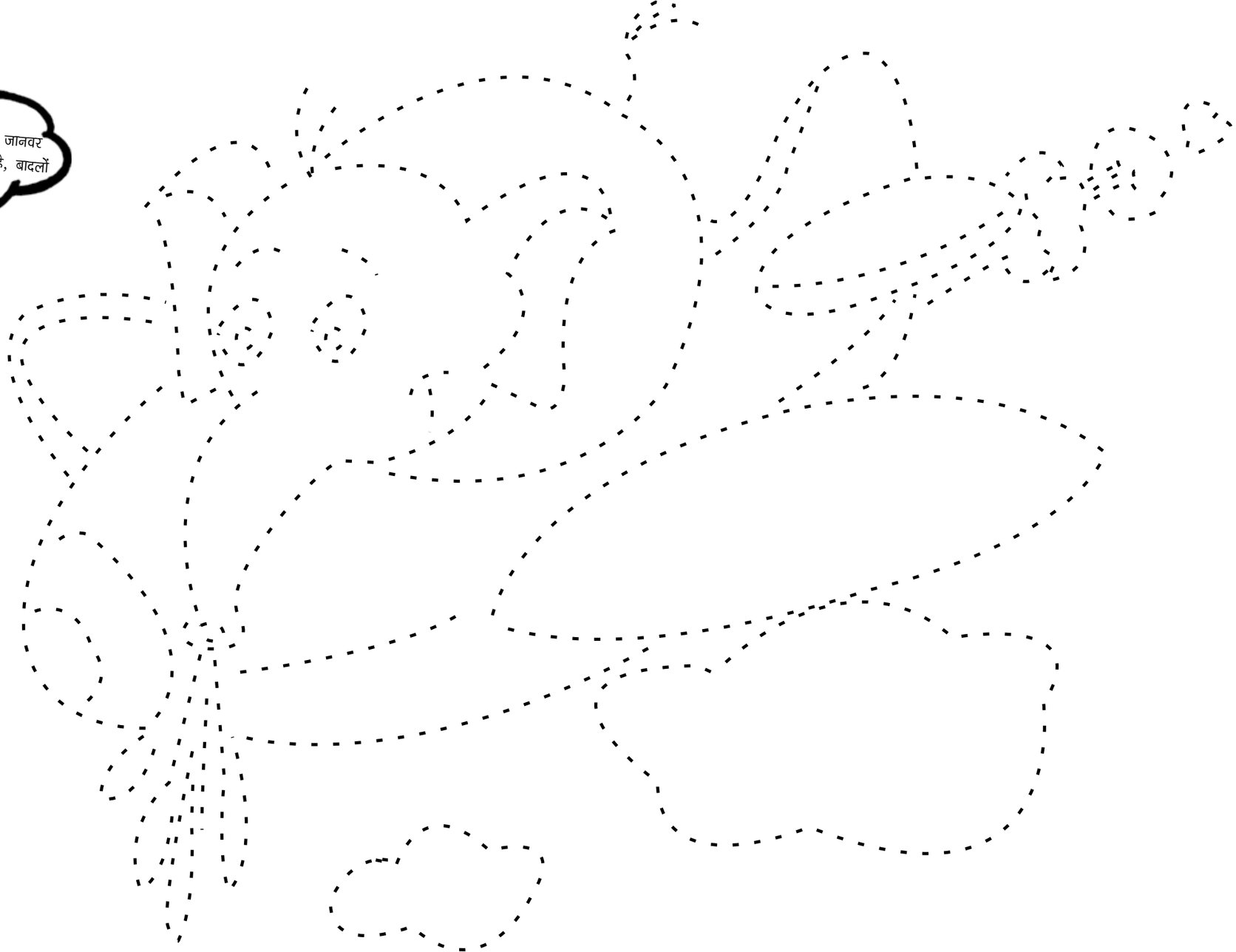

और भरो रंग
अपनी कल्पना के!

सुजाता सिंह ने एक चित्रकार और विजुअल आर्ट्स (दृश्य कला) की शिक्षक हैं। उन्होंने बच्चों की कई किताबों के लिए डिजाइन और चित्र बनाए हैं। उनके काम का विदेशों में भी प्रदर्शन हुआ है।

कथा

कथा एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त गैर–लाभकारी संस्था है जो कि शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में सन् 1988 से काम कर रही है। गरीबी में रहने वाले बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने का व उनके लिए विशेष किताबें बनाने का कथा के पास लगभग 30 साल का अनुभव है।

"भारत के मुकुट पर एक शैक्षिक हीरा!" – **नाओकी शिनोहरा, उपप्रबंध निर्देशक, आईएमएफ**

"कथा का काम इस विचार से प्रेरित है कि बच्चे अपने समुदायों में स्थायी बदलाव ला सकते हैं। जैसे कि बच्चे करते हैं (कथा की किताबों में)।" – **पेपरटाइगर्स**

"कथा बच्चों के लिए नर्म दिल है। तभी तो कथा बच्चों के लिए इतनी खूबसूरत किताबें बनाती है।" – **टाइम आउट**

"कथा दुनिया भर में उन रचनात्मक संगठनों के लिए एक उदाहरण है जो शहरों के सुधार के लिए काम करते हैं।"

– **चार्ल्स लैंड्री,** ***द आर्ट ऑफ़ सिटी मेकिंग***

हिंदी संस्करण 2021

कृति स्वामित्व © कथा 1994, 2021
मौलिक लेखन कृति स्वामित्व © गीता धर्मराजन
चित्राँकन कृति स्वामित्व © कथा
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।

नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित

हमारा लक्ष्यः हर बच्चा आनंद और अर्थवत्ता के लिए पढ़ें।

कथा एक पंजीकृत आलंमकारी संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में किया गया था। कथा शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में काम करती है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रूचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना। कथा 1,00,000 से भी अधिक बच्चों के साथ काम करती है ताकि वे मजे के लिए और कक्षा स्तर पर पढ़ सकें।

ए–3 सर्वोदय एन्क्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नयी दिल्ली – 110017
दूरभाषः 4141 6600 - 4141 6624 - 4182 9998
इ–मेलः marketing@katha-org
वेबसाइटः www-katha-org | www-books-katha-org

इस किताब की बिक्री में मिली राशि का 10% बच्चों की शिक्षा के लिए कथा स्कूल को दिया जाएगा।
कथा नियमित रूप से उस लकड़ी के बदले पेड़ लगाती है, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज बनता है।

यह पुस्तक कथा ने बहुत ध्यान और स्नेह के साथ बनायी है। यह 5 से 12 वर्ष आयु के बच्चों के लिए है।

यह हमारे 'UntextBook Inititaive' का हिस्सा हैं। बच्चों को पढ़ने का आनंद आये उसके लिए हम बेहतरीन साहित्य और कला का इस्तेमाल करते हैं।

अपने बच्चों के बिना शब्दों वाली किताबों से 1200 शब्दों वाली कहानियों की यात्रा कराएँ।

इसमें 3500 वर्ष पुराने साहित्य से कहानियाँ और कविताएँ हैं।

अपने बच्चों के साथ इन्हें पढ़ें। उनकी कल्पना को नयी उड़ान दें।

हमारे साथ '300 Million Citizens' Challenge' का हिस्सा बनिए। एक ऐसी दुनिया के निर्माण के लिए जहाँ बच्चे आनंद से पढ़ें और समझें।
हमसे जुड़ें: 300m@katha-org
स्वयंसेवा के लिए: volunteer@katha-org
पर हमें लिखें

'I Love Reading' Library कथा की एक खास श्रृंखला है। यह नए और संकोची बच्चों को सहजता से पढ़ना सिखाती है। इसका पाठ्यक्रम अलग – अलग स्तर पर पढ़ने वाले बच्चों को ध्यान में रख कर बनाया गया है। यह बेहतरीन साहित्य और कला को भारत एवं दुनिया भर से एकत्रित कर बनायी गयी है।
यह किताबें गीता धर्मराजन के 'StoryPedagogy' पर आधारित हैं। यह एक खास तरह का मॉडल है जो पहले स्कूल नहीं गए हुए बच्चों के लिए बनाया गया था। बच्चों को 'TADAA' (Think, Ask, Discuss, Act and Achieve) और 'बड़े विचारों' के द्वारा यह उनमें पढ़ने की खुशी और समझने की क्षमता बढ़ता है।

Katha's Holistic Early Learning (KHEL!) लैब सरकारी, निजी और गैर – लाभकारी विद्यालयों में कार्यशालाएँ कराती है। यह ऑनलाइन चलने वाली कार्यशालाएँ हैं। इसमें शिक्षकों, विद्यालय प्रबंधकों और स्वयं सेवकों को प्रमाण पत्र भी दिया जाता है।
अधिक जानकारी के लिए 300m@katha-org पर जाएँ।

यह सभी आई.एल.आर किताबें हैं

आनंद और समझने के लिए पढ़ो

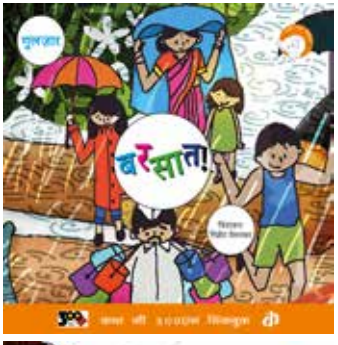

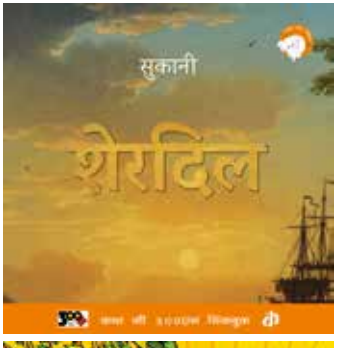

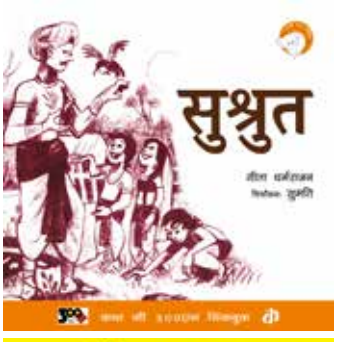

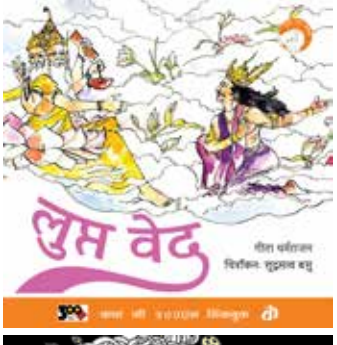

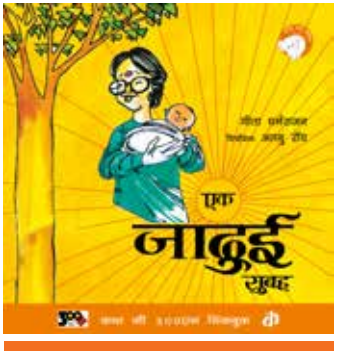

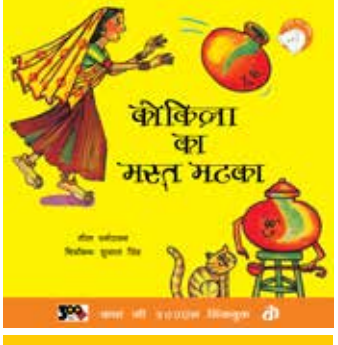

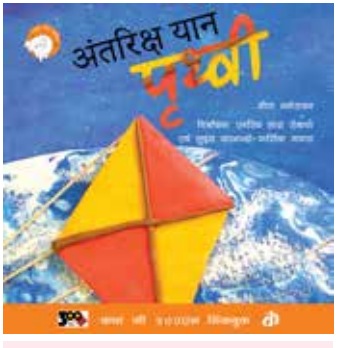

FOR OUR BOOKS

www.books.katha.org

"[Katha]...a special and unique moment in Indian Publishing history."

— The iconic The Economic Times

for children

a katha book

ISBN 978-93-88284-81-3

9 789388 284813

www.katha.org

₹ xxx

इसकी ऑरेंज श्रृंखला में